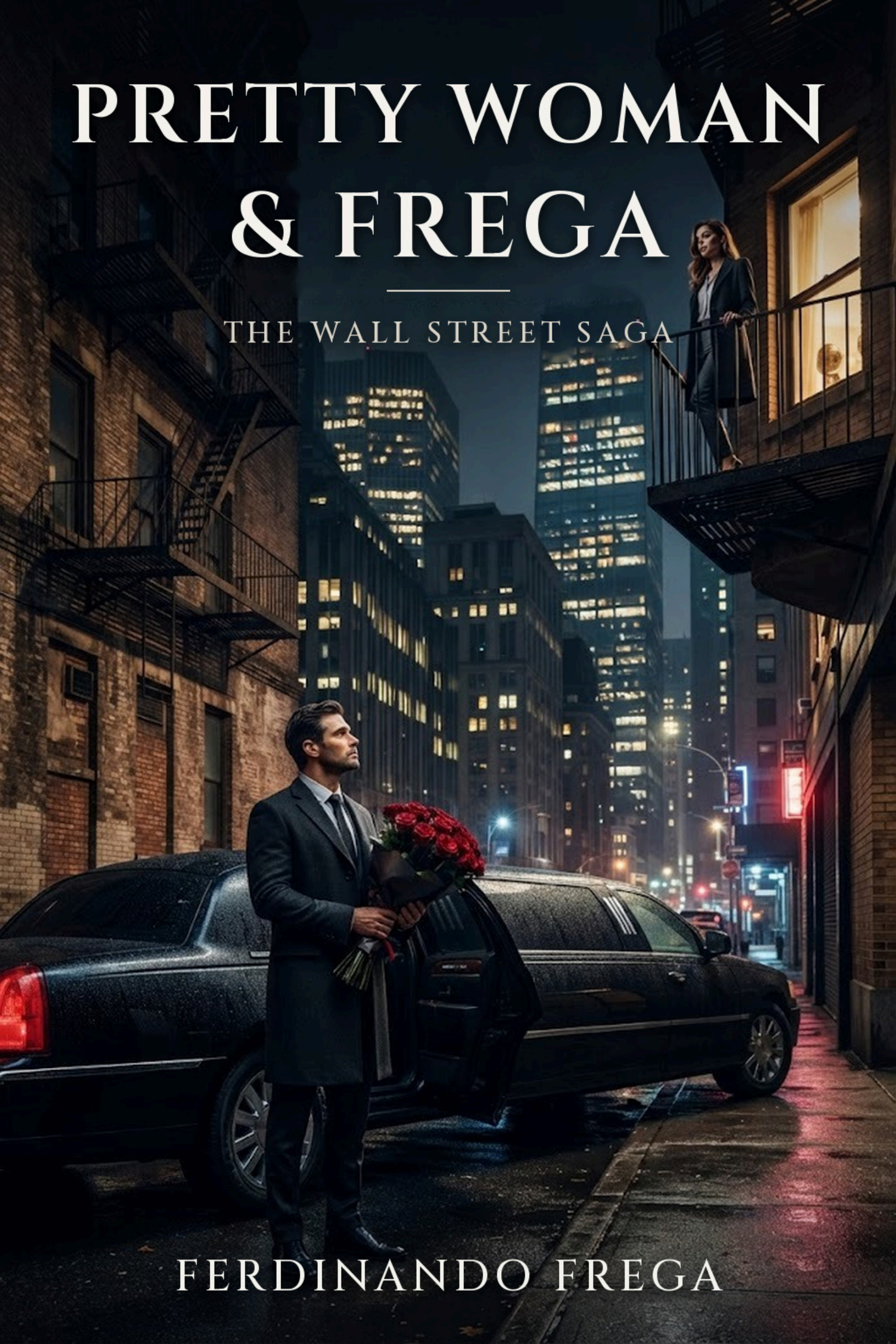


PRETTY WOMAN & FREGA

THE WALL STREET SAGA



FERDINANDO FREGA

प्रिटी वुमन, फ्रेगा और वॉल स्ट्रीट

वॉल स्ट्रीट गाथा

कुछ फ़िल्में क्लासिक बन जाती हैं। कुछ आईना।

प्रिटी वुमन दोनों बनी।

लाखों लोगों ने उसे देखा और एक प्रेम कहानी देखी।

मैंने उसे दोबारा देखा और कुछ और देखा।

मैंने दौलत के भेस में छिपे अकेलेपन की फ़िल्म देखी।

सपने देखने वालों के लिए बनी फ़िल्म, ख़ासकर उनके लिए जो कभी वहाँ नहीं पहुँचे जहाँ पहुँचना चाहते थे और जिन्होंने हकीक़त की जगह कल्पना में पनाह ले ली।

बरसों में मैंने सीखा है कि फ़िल्में अपने राज़ कहानी में कभी नहीं खोलतीं। दिलचस्प हिस्से ब्योरों में छिपे होते हैं।

एडवर्ड लुईस वित्त की दुनिया का महाबली है।

वह कंपनियाँ ख़रीद सकता है।

वह होटल ख़रीद सकता है।

वह दाम देखे बिना किसी इमारत की पूरी मंज़िल ख़रीद सकता है।

फिर भी उसे एक औरत नहीं मिलती।

इसीलिए आख़िरकार एक औरत उसे हॉलीवुड की सड़क पर मिलती है।

इसलिए नहीं कि उसे सेक्स की तलाश है।

इसलिए कि उसे जुड़ाव की तलाश है।

यह विडंबना लगभग चुभती है।

वह जितना अमीर होता जाता है, उस एक चीज़ से उतना ही दूर होता दिखता है जिसे वह ख़रीद नहीं सकता।

लोग अक्सर कहते हैं कि औरतें अमीर मर्द ढूँढ़ती हैं।

मेरा तज़ुर्बा ऐसा कभी नहीं रहा।

ज़्यादातर औरतें दौलत नहीं ढूँढ़तीं।

वे ठहराव ढूँढ़ती हैं।
पैसा अपने आप में अक्सर बस एक औज़ार होता है।
मेज़ पर खाना।
बच्चों के लिए सुरक्षा।
उन लोगों की हिफ़ाज़त जिनसे वे प्यार करती हैं।
औरत लोगों की भाषा में सोचती है।
मर्द अक्सर संपत्तियों की भाषा में सोचता है।
यह फ़र्क़ इंसानी इतिहास के बारे में अर्थशास्त्र की ज़्यादातर किताबों से ज़्यादा समझा देता है।
फिर आता है पेंटहाउस सुइट।
सबसे अच्छा कमरा।
सबसे ऊँची मंज़िल।
वैसा नज़ारा, जिसका लुत्फ़ उठाना कामयाब लोगों का काम माना जाता है।
बस एडवर्ड उसका लुत्फ़ नहीं उठा पाता।
उसे ऊँचाई से डर लगता है।
इमारत की सबसे ऊँची जगह उसकी है, पर वह कभी सचमुच बाहर नहीं देखता।
मैं ऐसे बहुत-से लोगों को जानता हूँ।
वे अपनी पूरी ज़िंदगी चढ़ते रहते हैं।
फिर चोटी पर पहुँचते हैं और पाते हैं कि उन्हें नज़ारे से डर लगता है।
बाद में वह मानता है कि अपने पिता की कंपनी ख़रीदकर उसे अच्छा लगा।
इस वाक्य पर ग़ौर कीजिए।
एक अरबपति, जो भावनात्मक तसल्ली ख़रीद रहा है।
एक कॉर्पोरेट अधिग्रहण, जो थेरेपी की तरह इस्तेमाल हो रहा है।
मक़सद कंपनी कभी थी ही नहीं।
एहसास था।
बैलेंस शीट तो बस उसे पहुँचाने का ज़रिया थी।

फिर आता है मेरा पसंदीदा पल।

घास।

वह उससे नंगे पाँव चलने को कहती है।

कोई बोर्डरूम नहीं।

कोई वकील नहीं।

कोई सौदेबाज़ी नहीं।

बस एक आदमी, जो अपने पैरों के नीचे ज़मीन महसूस कर रहा है।

कुछ पलों के लिए, वॉल स्ट्रीट का महापुरोहित उस चीज़ से फिर जुड़ जाता है जो पैसे से भी पुरानी है।

हकीकत।

कुदरत कभी बिल नहीं भेजती।

इसीलिए इतने सारे कामयाब लोग आखिरकार उसे याद करने लगते हैं।

अगला विरोधाभास और भी बढ़िया है।

वह उस औरत की गरिमा की हिफ़ाज़त करता है जिसे शुरू में उसने किराये पर लिया था।

उसकी इज़ज़त की ख़ातिर वह अपने ही एक साथी से भिड़ जाता है।

जो कारोबारी यह मानकर इस रिश्ते में दाख़िल हुआ था कि हर चीज़ की एक कीमत होती है, वह अचानक पाता है कि कुछ चीज़ों की नहीं होती।

सम्मान।

गरिमा।

स्नेह।

भरोसा।

बाज़ार चीज़ों के दाम लगाने में माहिर हैं।

उनकी क़द्र आँकने में वे निकम्मे हैं।

फ़िल्म वहीं ख़त्म हो सकती थी।

सबक़ पूरा हो चुका था।

पर हॉलीवुड इंसानी कमज़ोरी को ज़्यादातर दार्शनिकों से बेहतर समझता है।

हकीकत शायद ही कभी ब्लॉकबस्टर बनती है।
कल्पना बनती है।
तो, एडवर्ड लाल गुलाब लेकर लौटता है।
लिमोज़ीन आती है।
संगीत ऊँचा उठता है।
परीकथा ठीक वक़्त पर पहुँचा दी जाती है।
और दर्शक यह मानकर निकलते हैं कि प्यार ने पैसे पर जीत पा ली।
मुझे इतना यकीन नहीं है।
मुझे लगता है फ़िल्म इसलिए ज़िंदा है कि वह एक अलग कहानी कहती है।
एक अमीर आदमी के हाथों बचाई गई औरत की कहानी नहीं।
ख़ुद अपने आप से बचाए गए एक अमीर आदमी की कहानी।
महँगे सूट वाले मर्द दशकों से इस फ़िल्म को चाहते आए हैं, इसकी एक वजह है।
इसलिए नहीं कि वे अमीर बनने का सपना देखते हैं।
उनमें से बहुत-से पहले से अमीर हैं।
वे इसे इसलिए देखते हैं कि उन्हें गुमान है कि अगले सौदे, अगले अधिग्रहण, अगले बोनस, अगली जीत के पार भी कुछ
ज़रूर होगा।
वे सबूत ढूँढ़ते रहते हैं।
उनमें से बहुतों के लिए प्रिटी वुमन वही सबूत है।
दो घंटे की एक कल्पना, जो इशारा करती है कि नाप से सिले सूट के नीचे शायद अब भी एक इंसान बचा हो।
तो, क्रेडिट्स चलने के बाद क्या बचता है?
गुलाब नहीं।
पेंटहाउस नहीं।
पैसा नहीं।
प्रेम कहानी भी नहीं।
जो बचता है वह एक सीधी-सी बात है।

मर्द जो कुछ भी बनाता है, उसकी शुरुआत पीछे कहीं खड़ी एक औरत से होती है।

एक माँ।

एक बहन।

एक पत्नी।

एक बेटी।

एक अजनबी।

और देर-सबेर ज़िंदगी की यह अजीब आदत है कि वह उसे उसी मूल सच पर लौटा लाती है।

ग़लती यह मानना है कि उसे ख़रीदा जा सकता है।

नहीं ख़रीदा जा सकता।

समझदारी की चाल है ध्यान देना।

और इंतज़ार करना।

क्योंकि औरतों के पास ख़ास मामलों के लिए एक रडार होता है।

अक्सर, वे उन्हें मर्दों से बहुत पहले पहचान लेती हैं।

फर्दिनांदो फ्रेगा

ब्लेडफ्रेगा

वॉल स्ट्रीट गाथा